

## सूरह रअद - 13

## سُورَةُ الرَّعْدِ

### सूरह रअद के संक्षिप्त विषय

यह सूरह मक्की है, इस में 43 आयतें हैं।

- «रअद» का अर्थ: बादल की गरज है। इस सूरह की आयत नं० (13) में बताया गया है कि वह अल्लाह की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का गान करती है। इसी से इस का नाम रअद रखा गया है।
- इस सूरह में यह बताया गया है कि इस पुस्तक (कुर्आन पाक) का अल्लाह की ओर से उतरना सच्च है तथा उन लक्षणों की ओर ध्यान दिलाया गया है जिन से परलोक का विश्वास होता है तथा विरोधियों को चेतावनी दी गई है।
- तौहीद (ऐकेश्वरवाद) के विषय तथा सत्य और असत्य के अलग अलग परिणाम को बताया गया है। और सत्य के अनुयायियों के गुण और परलोक में उन का परिणाम तथा विरोधियों के दुष्परिणाम को प्रस्तुत किया गया है।
- विरोधियों को चेतावनी दी गई, तथा ईमान वालों को शुभ सूचना सुनाई गई है।
- और अन्त में रिसालत (दूतत्व) के विरोधियों को सावधान करने साथ आज्ञाकारियों के अच्छे अन्त को प्रस्तुत किया गया है ताकि विरोधियों को अल्लाह से भय की प्रेरणा मिले।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त  
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. अलिफ़, लाम, मीम, रा। यह इस पुस्तक (कुर्आन) की आयतें हैं। और (हे नबी!) जो आप पर आप के पालनहार की ओर से उतारा गया है सर्वथा सत्य है। परन्तु अधिकतर लोग

الْمُتَّبِعِينَ لِمَا يَكْتُمُونَ وَالَّذِينَ أَنْزَلَ إِلَيْكَ مِنَ  
رَبِّكَ الْحَقَّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ①

ईमान (विश्वास) नहीं रखते।

2. अल्लाह वही है जिस ने आकाशों को ऐसे सहारों के बिना ऊँचा किया है जिन्हें तुम देख सको। फिर अर्श (सिंहासन) पर स्थिर हो गया, तथा सूर्य और चाँद को नियम बद्ध किया। सब एक निर्धारित अवधि के लिये चल रहे हैं। वही इस विश्व की व्यवस्था कर रहा है, वह निशानियों का विवरण (व्योरा) दे रहा है ताकि तुम अपने पालनहार से मिलने का विश्वास करो।
3. तथा वही है जिस ने धरती को फैलाया। और उस में पर्वत तथा नहरें बनायीं, और प्रत्येक फलों के दो प्रकार बनाये। वह रात्रि से दिन को छुपा देता है। वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिये जो सोच विचार करते हैं।
4. और धरती में आपस में मिले हुये कई खण्ड हैं, और उद्यान (बाग़) हैं अँगूरों के तथा खेती और खजूर के वृक्ष हैं। कुछ एकहरे और कुछ दोहरे, सब एक ही जल से सींचे जाते हैं, और हम कुछ को स्वाद में कुछ से अधिक कर देते हैं, वास्तव में इस में बहुत सी निशानियाँ हैं, उन लोगों के लिये जो सूझ-बूझ रखते हैं।
5. तथा यदि आप आश्चर्य करते हैं तो आश्चर्य करने योग्य उन का यह<sup>[1]</sup>

اللَّهُ الَّذِي رَفَعَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ وَسَحَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى يُدَبِّرُ الْأَمْرَ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَاءِ رَبِّكُمْ تُوقِنُونَ ﴿١٣﴾

وَهُوَ الَّذِي مَدَّ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ جَعَلَ فِيهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ يُغْشَى الْبَيْلَ النَّهَارَ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١٤﴾

وَفِي الْأَرْضِ قِطْعٌ مُّتَّبِعُونَ وَجَنَّاتٍ مِنْ أَعْنَابٍ وَزُرْعٌ وَنَخِيلٌ صِنْوَانٌ وَعَيْرٌ صِنْوَانٌ يُسْقَى بِهَاءٍ وَاحِدَةٍ وَنُفِصِلُ بَعْضَهَا عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الْأَكْلِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٥﴾

وَإِنْ تُعْجِبُ فَعَجِبْ قَوْلُهُمْ إِذَا الْكَافِرَاءُ إِذَا

1. क्योंकि वह जानते हैं कि बीज धरती में सड़कर मिल जाता है, फिर उस से



कथन है कि जब हम मिट्टी हो जायेंगे, तो क्या वास्तव में हम नई उत्पत्ति में होंगे? उन्होंने ने ही अपने पालनहार के साथ कुफ़्र किया है, तथा उन्हीं के गलों में तौक पड़े होंगे, और वही नरक वाले हैं, जिस में वह सदा रहेंगे।

6. और वह आप से बुराई (यातना) की जल्दी मचा रह है भलाई से पहले। जब कि इन से पहले यातनाएँ आ चुकी हैं, और वास्तव में आप का पालनहार लोगों को उन के अत्याचार पर क्षमा करने वाला है। तथा निश्चय आप का पालनहार कड़ी यातना देने वाला (भी) है।
7. तथा जो काफ़िर हो गये वह कहते हैं कि आप पर आप के पालनहार की ओर से कोई आयत (चमत्कार) क्यों नहीं उतारा<sup>[1]</sup> गया। आप केवल सावधान करने वाले तथा प्रत्येक जाति को सीधी राह दिखाने वाले हैं।
8. अल्लाह ही जानता है जो प्रत्येक स्त्री के गर्भ में है, तथा गर्भाशय जो कम और अधिक<sup>[2]</sup> करते हैं, प्रत्येक चीज़ की

لَقَدْ خَلَقْنَا جَدِيدَهُ أُولَئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا  
بِرَبِّهِمْ وَأُولَئِكَ الظَّالِمُ فِي أَعْنَاقِهِمْ وَأُولَئِكَ  
أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ٥

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ  
خَلَقْتَ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثَلُ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو  
مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلَى ظُلُمِهِمْ وَإِنَّ رَبَّكَ  
لَشَدِيدُ الْعِقَابِ ٥

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ  
رَّبِّهِ إِنَّمَا أَنْتَ مُنْذِرٌ وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ٥

اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنْثَىٰ وَمَا تَغِيصُ  
الْأَرْحَامُ وَمَا تَرْزَأُ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِقَدَارٍ ٥

पौधा उगता है।

- 1 जिस से स्पष्ट हो जाता कि आप अल्लाह के रसूल हैं।
- 2 इब्ने उमर (रज़ियल्लाहु अन्हुमा) कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा: ग़ैब (परोक्ष) की तालिकायें पाँच हैं। जिन को केवल अल्लाह ही जानता है: कल की बात अल्लाह ही जानता है, और गर्भाशय जो कमी करते हैं उसे अल्लाह ही जानता है। वर्षा कब होगी उसे अल्लाह ही जानता है। और कोई प्राणी नहीं जानता कि वह किस धरती पर मरेगा। और न अल्लाह के सिवा कोई यह जानता

उस के यहाँ एक निश्चित मात्रा है।

9. वह सब छुपे और खुले प्रत्यक्ष को जानने वाला बड़ा महान् सर्वोच्च है।
10. (उस के लिये) बराबर है तुम में से जो बात चुपके बोले, और जो पुकार कर बोले। तथा कोई रात के अँधेरे में छुपा हो या दिन के उजाले में चल रहा हो।
11. उस (अल्लाह) के रखवाले (फ़रिश्ते) हैं। उस के आगे तथा पीछे, जो अल्लाह के आदेश से उस की रक्षा कर रहे हैं। वास्तव में अल्लाह किसी जाति की दशा नहीं बदलता जब तक वह स्वयं अपनी दशा न बदल ले। तथा जब अल्लाह किसी जाति के साथ बुराई का निश्चय कर ले तो उसे फेरा नहीं जा सकता, और न उन का उस (अल्लाह) के सिवा कोई सहायक है।
12. वही है जो विद्युत को तुम्हें भय तथा आशा<sup>1</sup> बना कर दिखाता है। और भारी बादलों को पैदा करता है।
13. और कड़क, अल्लाह की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन करती है, और फ़रिश्ते उस के भय से काँपते हैं। वह बिजलियाँ भेजता है, फिर जिस पर चाहता है गिरा देता है। तथा वह अल्लाह के बारे में विवाद करते हैं, जब कि उस का

عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرُ الْمُتَعَالِ ۝

سَوَاءٌ مِنْكُمْ مَنْ أَسَرَ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهِ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِاللَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ۝

لَهُ مُعَقَّدَاتٌ بَيْنَ يَدَيْهِ وَمَنْ خَلْفَهُ يَحْفَظُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّى يُعَيِّرُ مَا يَأْتِيهِمْ ۚ وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوءَ فَلَا مَرَدَّ لَهُ وَمَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَّالٍ ۝

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۝

وَيَسْمِعُ الرِّعْدَ بِعَمْدٍ ۚ وَالْمَلَائِكَةُ مِنْ خِيفَتِهِ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا مَنْ يَشَاءُ وَهُمْ يُجَادِلُونَ فِي اللَّهِ وَهُوَ شَدِيدُ الْحِجَالِ ۝

है कि प्रलय कब आयेगी। (सहीह बुखारी-4697)

1 अर्थात् वर्षा होने की आशा।



उपाय बड़ा प्रबल है।<sup>[1]</sup>

14. उसी (अल्लाह) को पुकारना सत्य है, और जो उस के सिवा दूसरों को पुकारते हैं, वह उन की प्रार्थना कुछ नहीं सुनते। जैसे कोई अपनी दोनों हथेलियाँ जल की ओर फैलाया हुआ हो, ताकि उस के मुँह में पहुँच जाये, जब कि वह उस तक पहुँचने वाला नहीं। और काफिरों की पुकार व्यर्थ (निष्फल) ही है।

15. और अल्लाह ही को सज्दा करता है, चाहे या न चाहे, वह जो आकाशों तथा धरती में है, और उन की परछाईयाँ<sup>[2]</sup> भी प्रातः और संध्या।<sup>[3]</sup>

16. उन से पुछो: आकाशों तथा धरती का पालनहार कौन है? कह दो: अल्लाह है। कहो कि क्या तुम ने अल्लाह के सिवा उन्हें सहायक बना लिया है जो अपने लिये किसी लाभ का अधिकार नहीं रखते, और न किसी हानि का? उन से कहो: क्या अन्धा और देखने वाला बराबर होता है, या अंधेरे और प्रकाश बराबर होते हैं?<sup>[4]</sup> अथवा उन्होंने अल्लाह का साझी बना लिया

لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْمَعُونَ لَهُمْ شَيْئًا إِلَّا كِبَاسٌ كَقَبِيضِهِ إِلَى الْمَاءِ لَئِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا نَزْوَاعًا وَمَا هُمْ بِبَالِغِهِ وَمَا دَعَا الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۝

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَظِلَالُهُم بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ ۝

قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ قُلْ اللَّهُ قُلْ أَتَأْتُونَكُمْ مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ لَا يَمْلِكُونَ لِأَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرَةُ أَمْ هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمَةُ وَالنُّورُ أَمْ جَعَلَ اللَّهُ شُرَكَاءَ خَلْقُوا كَخَلْقِهِ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ قُلِ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝

1 अर्थात् जैसे कोई प्यासा पानी की ओर हाथ फैला कर प्रार्थना करे कि मेरे मुँह में आ जा तो न पानी में सुनने की शक्ति है न उस के मुँह तक पहुँचने की। ऐसे ही काफिर, अल्लाह के सिवा जिन को पुकारते हैं न उन में सुनने की शक्ति है और न वह उन की सहायता करने का सामर्थ्य रखते हैं।

2 अर्थात् सब उस के स्वभाविक नियम के आधीन हैं।

3 यहाँ सज्दा करना चाहिये।

4 अंधेरे से अभिप्राय कुफ़्र के अंधेरे, तथा प्राकश से अभिप्राय ईमान का प्राकश है।

है ऐसों को जिन्होंने अल्लाह के उत्पत्ति करने के समान उत्पत्ति की है, अतः उत्पत्ति का विषय उन पर उलझ गया है? आप कह दें कि अल्लाह ही प्रत्येक चीज़ का उत्पत्ति करने वाला है,<sup>[1]</sup> और वही अकेला प्रभुत्वशाली है।

17. उस ने आकाश से जल बरसाया, जिस से वादियाँ (उपत्यकाएँ) अपनी समाई के अनुसार वह पड़ी। फिर (जल की) धारा के ऊपर झाग आ गया। और जिस चीज़ को वे आभूषण अथवा समान बनाने के लिये अग्नि में तपाते हैं, उस में भी ऐसा ही झाग होता है। इसी प्रकार अल्लाह सत्य तथा असत्य का उदाहरण देता है, फिर जो झाग है वह सुख कर ध्वस्त हो जाता है, और जो चीज़ लोगों को लाभ पहुँचाती है, वह धरती में रह जाती है। इसी प्रकार अल्लाह उदाहरण देता<sup>[2]</sup> है।

18. जिन लोगों ने अपने पालनहार की बात मान ली, उन्हीं के लिये भलाई है। और जिन्होंने ने नहीं मानी, तो यदि

أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ  
بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا أَرَابِيًّا  
وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ جَلِيَّةٍ  
أَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِثْلُهُ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ  
الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ذَا قَامًا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ  
جُفَاءً وَأَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ  
فِي الْأَرْضِ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ ۝

لِلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ الْخَيْرُ وَالَّذِينَ لَمْ  
يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ أَنَّ لَهُمْ تَابًا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ

- 1 आयत का भावार्थ यह है कि जिस ने इस विश्व की प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति की है। वही वास्तविक पूज्य है। और जो स्वयं उत्पत्ति हो वह पूज्य नहीं हो सकता। इस तथ्य को कुर्आन पाक की और भी कई आयतों में प्रस्तुत किया गया है।
- 2 इस उदाहरण में सत्य और असत्य के बीच संघर्ष को दिखाया गया है कि वही द्वारा जो सत्य उतारा गया है वह वर्षा के समान है। और जो उस से लाभ प्राप्त करते हैं वह नालों के समान हैं। और सत्य के विरोधी सैलाब के झाग के समान हैं जो कुछ देर के लिये उभरता है फिर विलय हो जाता है। दूसरे उदाहरण में सत्य को सोने और चाँदी के समान बताया गया है जिसे पिघलाने से मैल उभरता है फिर मैल उड़ता है। इसी प्रकार असत्य विलय हो जाता है। और केवल सत्य रह जाता है।



जो कुछ धरती में है, सब उन का हो जाये, और उस के साथ उस के समान और भी, तो वह उसे (अल्लाह के दण्ड से बचने के लिये) अर्धदण्ड के रूप में दे देंगे। उन्हीं से कड़ा हिसाब लिया जायेगा, तथा उन का स्थान नरक है। और वह बुरा रहने का स्थान है।

مَعَهُ لَافِتَدَوَابُّهُ أُولَٰئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ  
وَمَا أُولَٰئِكَ بِجَهَنَّمَ وَبِئْسَ الْبِهَادُ

19. तो क्या जो जानता है कि आप के पालनहार की ओर से जो (कुर्आन) आप पर उतारा गया है सत्य है, उस के समान है, जो अन्धा है? वास्तव में बुद्धिमान लोग ही शिक्षा ग्रहण करते हैं।

أَفَمَنْ يَعْلَمُ أَنَّمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمَىٰ ۚ أَلَمْ يَتَذَكَّرْ أُولَٰئِكَ الْأَبَابُ

20. जो अल्लाह से किया वचन<sup>[1]</sup> पूरा करते हैं, और वचन भंग नहीं करते।

الَّذِينَ يُوفُونَ بَعْدَ اللَّهِ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ

21. और उन (संबंधों) को जोड़ते हैं, जिन के जोड़ने का अल्लाह ने आदेश दिया है, और अपने पालनहार से डरते हैं, तथा बुरे हिसाब से डरते हैं।

وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ

22. तथा जिन लोगों ने अपने पालनहार की प्रसन्नता के लिये धैर्य से काम लिया, और नमाज़ की स्थापना की, तथा हम ने उन्हें जो कुछ प्रदान किया है उस में से छुपे और खुले तरीके से दान करते रहे, तो वही हैं, जिन के लिये परलोक का घर (स्वर्ग) है।

وَالَّذِينَ صَبَرُوا ابْتِعَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً وَيَذَرُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ

23. ऐसे स्थायी स्वर्ग जिन में वे और उन के बाप दादा तथा उनकी पत्नियों और संतान में से जो सदाचारी हों प्रवेश करेंगे, तथा फ़रिश्ते उन के

جَعَلْتُ عَذِينَ يَدْخُلُونَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّتِهِمُ الْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ

पास प्रत्येक द्वार से (स्वागत के लिये) प्रवेश करेंगे।

24. (वे कहेंगे): तुम पर शान्ति हो, उस धैर्य के कारण जो तुम ने किया, तो क्या ही अच्छा है, यह परलोक का घर!

25. और जो लोग अल्लाह से किये वचन को उसे सुदृढ़ करने के पश्चात् भंग कर देते हैं, और अल्लाह ने जिस संबन्ध को जोड़ने का आदेश दिया<sup>[1]</sup> है उसे तोड़ते हैं, और धरती में उपद्रव फैलाते हैं। वही हैं जिन के लिये धिक्कार है, और जिन के लिये बुरा आवास है।

26. और अल्लाह जिसे चाहे उसे जीविका फैला कर देता है, और जिसे चाहे नाप कर देता है। और वह (काफिर) संसारिक जीवन में मग्न है, तथा संसारिक जीवन परलोक की अपेक्षा तनिक लाभ के सामान के सिवा कुछ भी नहीं है।

27. और जो काफिर हो गये, वह कहते हैं: इस पर इस के पालनहार की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गयी? (हे नबी!) आप कह दें कि वास्तव में अल्लाह जिसे चाहे कुपथ करता है, और अपनी ओर उसी को राह दिखाता है जो उस की ओर ध्यानमग्न हों।

سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ۝

وَالَّذِينَ يَتَّقُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ أُولَٰئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ۝

اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ وَفَرُحُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْحَيَاةُ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مَتَاعٌ ۝

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ أَرَادَ ۝

1 हदीस में आया है कि जो व्यक्ति यह चाहता हो कि उस की जीविका अधिक, और आयु लम्बी हो तो वह अपने संबंधों के जोड़े। (सहीह बुखारी, 2067, सहीह मुस्लिम, 2557)



28. (अर्थात् वह) लोग जो ईमान लाये, तथा जिन के दिल अल्लाह के स्मरण से संतुष्ट होते हैं। सुन लो! अल्लाह के स्मरण ही से दिलों को संतोष होता है।

الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُمْ بِذِكْرِ اللَّهِ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ۝

29. जो लोग ईमान लाये और सदाचार किये, उन के लिये आनन्द<sup>[1]</sup>, और उत्तम ठिकाना है।

الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ طُوبَىٰ لَهُمْ وَحُسْنُ مَآبٍ ۝

30. इसी प्रकार हम ने आप को एक समुदाय में जिस से पहले बहुत से समुदाय गुजर चुके हैं, रसूल बना कर भेजा है, ताकि आप उन को वह संदेश सुनायें जो हम ने आप की ओर वही द्वारा भेजा है, और वह अत्यंत कृपाशील को अस्वीकार करते हैं? आप कह दें: वही मेरा पालनहार है, कोई पूज्य नहीं परन्तु वही। मैंने उसी पर भरोसा किया है और उसी की ओर मुझे जाना है।

كَذَٰلِكَ أَرْسَلْنَاكَ فِي آثَمِ قَوْمٍ خَلَدَ مِنْ قَبْلِهَا أَمَمٌ لِّتَتْلُوَ عَلَيْهِمُ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ بِالرَّحْمَنِ قُلْ هُوَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ مَتَابٌ ۝

31. यदि कोई ऐसा कुर्आन होता जिस से पर्वत खिसका<sup>[2]</sup> दिये जाते, या धरती खण्ड-खण्ड कर दी जाती, या इस के द्वारा मुर्दा से बात की जाती (तो भी वह ईमान नहीं लाते)। बात

وَلَوْ أَنَّ قُرْآنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُطِعَتْ بِهِ الْأَرْضُ أَوْ كُفِّرَ بِهِ الْمَوْتَىٰ بَلْ لِلَّهِ الْأَمْرُ جَمِيعًا أَفَلَمْ يَأْنَسِ الَّذِينَ آمَنُوا أَنَّ لَوْ شَاءَ اللَّهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيعًا وَلَا نَزَالُ الَّذِينَ كَفَرُوا أُصْحَابُهُمْ بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةً

1 यहाँ "तूबा" शब्द प्रयुक्त हुआ है। इस का शाब्दिक अर्थ: सुख और सम्पत्ति है। कुछ भाष्यकारों ने इसे स्वर्ग का एक वृक्ष बताया है जिस का साया बड़ा आनन्ददायक होगा।

2 मक्का के काफिर आप से यह माँग करते थे कि यदि आप नबी हैं तो हमारे बाप दादा को जीवित कर दें। ताकि हम उन से बात करें। या मक्का के पर्वतों को खिसका दें। कुछ मुसलमानों के दिलों में भी यह इच्छा हुई कि ऐसा हो जाता है तो संभव है कि वह ईमान ले आयें। उसी पर यह आयत उतरी। (देखिये: फत्हुल बयान, भाष्य सूरह रअद)

यह है कि सब अधिकार अल्लाह ही को हैं, तो क्या जो ईमान लाये हैं, वह निराश नहीं हुये कि यदि अल्लाह चाहता तो सब लोगों को सीधी राह पर कर देता! और काफ़िरों को उन के कर्तुत के कारण बराबर आपदा पहुँचती रहेगी अथवा उन के घर के समीप उतरती रहेगी यहाँ तक कि अल्लाह का वचन<sup>[1]</sup> आ जाये, और अल्लाह, वचन का विरुद्ध नहीं करता।

32. और आप से पहले भी बहुत से रसूलों का परिहास किया गया है, तो हम ने काफ़िरों को अवसर दिया। फिर उन्हें धर लिया, तो मेरी यातना कैसी रही?

33. तो क्या जो प्रत्येक प्राणी के कर्तुत से अवगत है, और उन्होंने ने (उस) अल्लाह का साझी बना लिया है, आप कहिये कि उन के नाम बताओ। या तुम उसे उस चीज़ से सूचित कर रहे हो जिसे वह धरती में नहीं जानता, या ओछी बात<sup>[2]</sup> करते हो? बल्कि काफ़िरों के लिये उन के छल सुशोभित बना दिये गये हैं। और सीधी राह से रोक दिये गये हैं, और जिसे अल्लाह कुपथ कर दे तो उस को कोई राह दिखाने वाला नहीं।

34. उन्हीं के लिये यातना है संसारिक जीवन में। और निःसंदेह परलोक की यातना अधिक कड़ी है। और उन को

أَوْعَلُّ قَرِيبًا مِّن دَارِهِمْ حَتَّىٰ يَأْتِيَ وَعْدُ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْوَعْدَ ۝

وَلَقَدْ اسْتَهْزَيْتُمْ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَآتَيْنَا الَّذِينَ كَفَرُوا ثُمَّ أَخَذْنَاهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِي ۝

أَفَمَن هُوَ قَائِمٌ عَلَىٰ كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ قُلُوبُهُمْ قُلُوبُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ فِي الْأَرْضِ أَمَّا بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ بَلَّغْنَاهُم لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مَكْرَهُمْ وَصَدُّوا عَنِ السَّبِيلِ وَمَن يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن هَادٍ ۝

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَقُّ وَمَا لَهُم مِّنَ اللَّهِ مِن وَّاقٍ ۝

1 वचन से अभिप्राय प्रलय के आने का वचन है।

2 अर्थात् निर्मूल और निराधार।



अल्लाह से कोई बचाने वाला नहीं।

35. उस स्वर्ग का उदाहरण जिस का वचन आज्ञाकारियों को दिया गया है उस में नहरें बहती हैं, उस के फल सतत हैं, और उस की छाया। यह उन का परिणाम है जो अल्लाह से डरे, और काफ़िरों का परिणाम नरक है।

36. (हे नबी!) जिन को हम ने पुस्तक दी है वह उस (कुर्आन) से प्रसन्न हो रहे हैं<sup>[1]</sup> जो आप की ओर उतारा गया है। और सम्प्रदायों में कुछ ऐसे भी हैं, जो नहीं मानते<sup>[2]</sup> आप कह दें कि मुझे आदेश दिया गया है कि अल्लाह की इबादत (वन्दना) करूँ, और उस का साझी न बनाऊँ। मैं उसी की ओर बुलाता हूँ, और उसी की ओर मुझे जाना है।<sup>[3]</sup>

37. और इसी प्रकार हम ने इस को अर्बी आदेश के रूप में उतारा है<sup>[4]</sup> और यदि आप उन की आकांक्षाओं का अनुसरण करेंगे, इसके पश्चात् कि आप के पास ज्ञान आ गया, तो अल्लाह से आप का कोई सहायक और रक्षक न होगा।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ كُلُّهَا دَائِمٌ وَظِلُّهَا تِلْكَ عُقْبَى الَّذِينَ اتَّقَوْا وَعُقْبَى الْكَافِرِينَ النَّارُ ۝

وَالَّذِينَ اتَّيْنَهُمُ الْكِتَابُ يَفْرَحُونَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمِنَ الْأَحْزَابِ مَنْ يُكْفِرُ بَعْضَهُ فُلَانِمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ وَلَا أُشْرِكَ بِهِ إِلَيْهِ أَدْعُوا وَلِلَّهِ مآبٌ ۝

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا وَلَئِنْ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَ فُجَرَاءَ بَعْدَ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا وَاقٍ ۝

1 अर्थात् वह यहूदी, ईसाई और मूर्तिपूजक जो इस्लाम लाये।

2 अर्थात् जो अब तक मुसलमान नहीं हुये।

3 अर्थात् कोई ईमान लाये या न लाये, मैं तो कदापि किसी को उस का साझी नहीं बना सकता।

4 ताकि वह बहाना न करें कि हम कुर्आन को समझ नहीं सके, इसलिये कि सारे नबियों पर जो पुस्तकें उतरीं वह उन्हीं की भाषाओं में थीं।

38. और हम ने आप से पहले बहुत से रसूलों को भेजा है, और उन की पत्नियाँ तथा बाल-बच्चे<sup>[1]</sup> बनाये। किसी रसूल के बस में नहीं है कि अल्लाह की अनुमति बिना कोई निशानी ला दे। और हर वचन के लिये एक निर्धारित समय है।<sup>[2]</sup>

39. वह जो (आदेश) चाहे मिटा देता है और जो चाहे शेष (साबित) रखता है। उसी के पास मूल<sup>[3]</sup> पुस्तक है।

40. और (हे नबी!) यदि हम आप को उस में से कुछ दिखा दें जिस की धमकी हम ने उन (काफ़िरों) को दी है, अथवा आप को (पहले ही) मौत दे दें, तो आप का काम उपदेश पहुँचा देना है। और हिसाब लेना हमारा काम है।

41. क्या वे नहीं देखते कि हम धरती को उस के किनारों से कम करते<sup>[4]</sup> जा रहे हैं। और अल्लाह ही आदेश देता है कोई उस के आदेश का प्रत्यालोचन करने वाला नहीं, और वह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

42. तथा उस से पहले (भी) लोगों ने रसूलों के साथ षडयंत्र रचा, और षडयंत्र (को निष्फल करने) का सब

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ  
أَزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ  
بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ لِكُلِّ أَجَلٍ كِتَابٌ ۝

يَمْحُو اللَّهُ مَا يَشَاءُ وَيُثَبِّتُ ۖ وَعِنْدَهُ أُمُّ الْكِتَابِ ۝

وَأِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ  
نَتَوَقَّيَنَّكَ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاءُ وَعَلَيْنَا  
الْحِسَابُ ۝

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا  
وَاللَّهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقَّبَ لِحُكْمِهِ وَهُوَ سَرِيعُ  
الْحِسَابِ ۝

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَبَلَغَهُ الْبُكْرُ  
جَمِيعًا يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ وَسَيَعْلَمُ

1 अर्थात् वह मनुष्य थे, नूर या फरिश्ते नहीं।

2 अर्थात् अल्लाह का वादा अपने समय पर पूरा हो कर रहेगा उस में देर- सवेर नहीं होगी।

3 अर्थात् (लौहे महफूज़) जिस में सब कुछ अंकित है।

4 अर्थात् मुसलमानों की विजय द्वारा काफ़िरों के देश में कमी करते जा रहे हैं।



अधिकार तो अल्लाह को है, वह जो कुछ प्रत्येक प्राणी करता है, उसे जानता है। और काफ़िरों को शीघ्र ही ज्ञान हो जायेगा कि परलोक का घर किस के लिये है?

الْكَافِرُ لِمَنْ عُنِيَ الدَّارِ ۝

43. (हे नबी!) जो काफ़िर हो गये, वे कहते हैं कि आप अल्लाह के भेजे हुये नहीं हैं। आप कह दें: मेरे तथा तुम्हारे बीच अल्लाह की गवाही तथा उन की गवाही जिन्हें किताब का ज्ञान दिया गया काफी है।<sup>[1]</sup>

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا أَلَمْ نَكُنْ رُسُلًا قَدْ كَفَىٰ  
بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَمَنْ عِنْدَهُ عِلْمُ  
الْكِتَابِ ۝

1 अर्थात् उन अहले किताब (यहूदी और ईसाई) की जिन को अपनी पुस्तकों से नबी मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के आने की शुभसूचना का ज्ञान हुआ तो वह इस्लाम ले आये। जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम तथा नजाशी (हब्शा देश का राजा), और तमीम दारी इत्यादि। और आप के रसूल होने की गवाही देते हैं।